ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /107

उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएँ एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

– *संगीता शर्मा एवं **प्रो0 जय शंकर पाण्डेय
*शोध छात्रा समाजशास्त्र एवं * * शोध पर्यवेक्षक
बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज, चारबाग, लखनऊ
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

सारांश

मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के उद्देश्य का विशेष महत्व है, बिना उद्देश्य के हम जीवन के किसी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते, शिक्षा के क्षेत्र में भी यही बात है । शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 के अनुसार "शिक्षा के व्यापक लक्ष्य है. बच्चों के भीतर विचार और कर्म की स्वतंत्रता विकसित करना, दूसरों के कल्याण और उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना है ।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन सभी गुणों का समावेश है । यह शोध पत्र उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में एन. ई. पी. 2020 की मुख्य विशेषताओं एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में एन. ई. पी. 2020 की भूमिका पर आधारित है । यह शिक्षा नीति अपने आप में अनेक विचारों नये दृष्टिकोणो एवं समग्र शिक्षा प्रणाली को समाहित की हुई है। यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है एवं तथ्यों का संकलन गुणात्मक शोध पद्धति एवं द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से किया गया है।

मुख्य शब्द– राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान परम्परा, उच्च शिक्षा, सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास, शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा, वर्णनात्मक शोध ।

प्रस्तावना– भारत का उच्च शिक्षा तंत्र अमेरिका, चीन के बाद विश्व का सबसे बड़ा उच्च शिक्षा तंत्र है। सबसे पहले हमें शिक्षा क्या है? समझना आवश्यक है, शिक्षा किसी भी समाज में चलने वाली निरन्तर प्रक्रिया है, शिक्षा व्यक्ति के सर्वागींण विकास अर्थात् आन्तरिक शक्तियों के विकास, आत्मविकास एवं कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है एवं व्यक्ति में अपने अधिकारों एवं दायित्वों के प्रति जागरुकता लाती है, साथ ही साथ दूसरों की सहायता करने में सक्षम बनाती है । शिक्षा के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी जी ने कहा था, "शिक्षा का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वागींण विकास से है ।"

डॉ भीम राव अम्बेडकर ने कहा था, "शिक्षा ही व्यक्ति को निडर बनाती है, एकता का पाठ पढ़ाती है, अपने अधिकारों के प्रति जागरुक करती है और अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में 21 वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। **स्वतंत्रता के बाद यह देश की तीसरी शिक्षा नीति है ।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा यह शिक्षा नीति लाई गई है, जिसका प्रारुप के. कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई है । पहली शिक्षा नीति 1968 और दूसरी शिक्षा नीति 1986 में लागू की गई थी । एन. ई. पी.2020 का लक्ष्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को तैयार करना है, जो छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करें एवं भारत के सभी बच्चों को लाभान्वित करें । इसका उद्देश्य शिक्षा एवं सीखने पर ध्यान केन्द्रित करना है और भारत को एक वैश्विक महाशक्ति बनाना है । स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, "हम ऐसी शिक्षा चाहते है जिससे चरित्र का निर्माण, मन की शक्ति बढे, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकें ।"

एन. ई. पी. 2020 इन सभी गुणों को अपने में समाहित की हुई है । यह नीति पहुँच, समता, गुणवत्ता, सामर्थ्य एवं जवाबदेही पर आधारित है। नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है । इस नीति द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा को जानना, समझना एवं अपने विचारों को सबके समक्ष रखने पर जोर दिया गया है । भारत की ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक मूल्यों को आधार मानकर शिक्षार्थी में संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के साथ साथ नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं मूल्यों पर आधारित व्यक्तित्व विकास को इस नीति में महत्वपूर्ण माना गया है । इस नीति में भारत द्वारा 2015 में अपनाये गये सतत् विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 में परिलक्षित, वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2020 तक सभी के लिए समावेशी शिक्षा एवं समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने एवं जीवनपर्यन्त शिक्षा को बढ़ावा देने का लक्ष्य है । इस तरह के उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एन. ई. पी. 2020 संपूर्ण शिक्षा का समर्थन और अधिगम को बढ़ावा देने और उसे पुर्नगठित करने की आवश्यकता एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समावेश की बात करती है । यह शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृति, कला के ज्ञान को व्यक्तित्व निर्माण के लिये उतना ही आवश्यक मानती है, जितना विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान को । अतः एन. ई. पी. 2020 अपने आप में अनेक विचारों, नये दृष्टिकोणों, कलात्मक, रचनात्मक ज्ञान एवं सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को समाहित की हुई है ।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

बी.जी.तिलक(2011)–अपने अध्ययन में बताया कि विकास के लिए उच्च शिक्षा का योगदान काफी महत्वपूर्ण है । भारत में उच्च शिक्षा की उपेक्षा की प्रबल प्रवृत्ति रही है । भारत में उच्च शिक्षा पर एक सुसंगत स्पष्ट और दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य होना अति आवश्यक है ।

बी.आर.गैकवाद एवं आर.एस.सोलंकी(2013)– अपने अध्ययन में बताया कि भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली पर अधिक विनियमन के लिये उच्च शिक्षा के विकास से इस शिक्षा नीति के मूल उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होगी, बल्कि यह देखना आवश्यक कि विश्वविद्यालयऔर कॉलेज छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें ।

ए.मोहन्ती(2018)– अपने अध्ययन में निष्कर्ष दिया कि सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने लिये विशेष रूप से एस.डी.जी. 4 को हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को मजबूत और प्रगतिशील बनाने के लिये एक तंत्र के रुप में अपनाना आवश्यक है ।

आर.शमिका, एन. गुप्ता, पी. नागराज (2019)– अपने अध्ययन में बताया कि भारत में उच्च शिक्षा में क्षेत्र में तेजी से विस्तार देखा गया है । उच्च शिक्षा संस्थाओं (एच.ई.आई.) की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है, भारतीय शिक्षा प्रणाली 51,649 संस्थानों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली में से एक है एवं भारत में शिक्षा का स्तर भी ऊँचा उठा है ।

एम.मूर्ति एवं आर.एम. बेसेंट– उच्च शिक्षा में नामांकन तेजी से बढ़ रहा है । उच्च एवं निम्न आय वाले देशों में समान रुप से वृद्धि असमान रही है । भारत में उच्चतम वर्ग से 40ः छात्र एवं निम्नतम वर्ग से 5ः छात्र शिक्षा प्राप्त करते है, अतः पहले की तुलना में भारत की शिक्षा प्रणाली अत्यधिक प्रभावी है ।

अध्ययन का उद्देश्य

1) उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में एन. ई. पी 2020 की विशेषताओं का अध्ययन करना ।

2) भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका का अध्ययन करना ।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है । यह अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है एवं तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से किया गया है ।

संकलित तथ्यों के आधार पर उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में एन. ई. पी. 2020 की विशेषताएं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार "इस नीति का दृष्टिकोण छात्रों में भारतीय होने का गर्व न सिर्फ विचारों में बल्कि उनके व्यवहार, बुद्धि, कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यो और सोच में भी होना चाहिए ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सके ।"

1) शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा– एन.ई.पी. 2020 शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा देने पर बल देती है, ताकि छात्र– छात्रायें तार्किक एवं रचनात्मक रुप से सीखना सीखें । विभिन्न विषयों को अन्तर्सम्बन्धित करके कुछ नया सोच पाये और बदलती परिस्थितियों में उसका प्रयोग कर सकें ।

2) विषय एवं कोर्स चुनावों में विकल्प– इस नीति द्वारा छात्रों को एक विषय से अधिक विषयों को पढ़ने की स्वतंत्रता बच्चों को दी गई है, जैसे जो छात्र इंजीनीयरिंग कर रहे है वह संगीत या किसी अन्य विषय को भी साथ में पढ़ सकते है ।

3) शिक्षक प्रशिक्षण– इस नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है, व्यापक सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और सभी कार्यक्रमों को विश्ववि।लयों या कॉलेज के स्तर पर शामिल करने की बात की गई है।

4) मल्टीपल एंट्री एंड एक्जिट व्यवस्था– एन.ई.पी.2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एक्जिट व्यवस्था को अपनाया गया है । इसके तहत छात्र 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरुप डिग्री या प्रमाणपत्र दिया जायेगा । 1 वर्षो के बाद प्रमाणपत्र, 2 वर्षो के बाद एडवांस डिप्लोमा, 3 वर्षो के बाद स्नातक की डिग्री एवं 4 वर्षो के बाद शोध के साथ स्नातक ।

5) सकल नामांकन अनुपात– उच्च शिक्षा संस्थानों में सकल नामांकन अनुपा को 26.3 प्रतिशत (वर्ष 2018) से बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक का लक्ष्य रखा गया है ।

6) आउट आफ द बॉक्स विचारों को प्रोत्साहन– एन.ई.पी.2020 के द्वारा आउट आफ द बॉक्स विचारों को सबके समक्ष रखने के लिये प्रोत्साहित करता है, ताकि छात्र– छात्रायें एवं शिक्षक ऐसे विचारों को समक्ष रखें जो देश के विकास एवं कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें ।

7) एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट– उच्च शिक्षा संस्थानों से प्राप्त अंको या क्रेडिट को डिजिटल रुप से सुरक्षित रखने के लिये एक एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट दिया जायेगा, ताकि अलग–अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके ।

8) व्यावसायिक शिक्षा– सभी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा उच्च शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग होगी, इस नीति का उद्देश्य 2025 तक 50 फीसदी छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है ।

9) अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध कार्यों को प्रोत्साहन– एन.ई.पी.2020 अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों के लिये भारत में शोध करने एवं भारतीय छात्र जो विदेशों में जाकर शोध कार्य करना चाहते है उन्हें अवसर प्रदान करना ।

10) भारतीय उच्च शिक्षा परिषद् का गठन– इस शिक्षा नीति में देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिये एक एकल नियामक अर्थात् भारतीय उच्च शिक्षा परिषद् के गठन की बात की गई है, जिसमें विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करने के लिये कई कार्य क्षेत्र होगे । भारतीय उच्च शिक्षा आयोग चिकित्सा और कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिक्षा के लिये एकल निकाय का कार्य करेगा ।

भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विज्ञान की समृद्ध परम्परा के आलोक यह नीति शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करने, मौजूदा शिक्षा प्रणाली में सुधार, बहु अनुशासनात्मक शिक्षा, संकल्पनात्मक समक्ष एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करती है । भारत में समग्र एवं बहुविषयक तरीके से सीखने की एक प्राचीन परम्परा है । तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे

विश्वविद्यालयों से लेकर कई व्यापक साहित्य है, जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट करते है । इस शिक्षा नीति में आदिवासी एवं स्वदेशी ज्ञान सहित भारतीय ज्ञान प्रणालियों को सटीक और वैज्ञानिक तरीके से पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात की गई है । एन.ई.पी.2020 में चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट चाणक्य, माधव, पतंजलि, पाणिनी आदि प्राचीन विद्वानों का उल्लेख है । जहाँ भारत और हजारों जगहों से आये छात्र जीवन्त और बहुविषयक परिवेश में शिक्षा ले रहे थे । इस नीति में कहा गया कि भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य और अभिनव व्यक्ति को बनाने के लिए इस परम्परा को वापस लाने की आवश्यकता है, ताकि छात्रों का कम उम्र में सही तरीका सिखाया जा सके और नैतिक निर्णय लेने में उन्हें सामर्थ्य बनाया जा सकें । एन.ई.पी.2020 के अपने एक प्रोजेक्ट लैंग्वेज ऑफ इण्डिया में सभी छात्रों को भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करती है, जिससे छात्र भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में जाने, कौन से क्षेत्र में कौन सी भाषा बोली जाती है उनकी प्रकृति एवं संरचना को समझे, ताकि भारत की प्रमुख भाषाओं और उभरते साहित्य के बारे में कुछ कहना सीखें । यह नीति सभी छात्राओं को भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की बात करती है । यह नीति भारत की समृद्ध विविधता एवं संस्कृति प्रति सम्मान रखते हुए भारत के युवाओं, छात्रों एवं शिक्षकों को भारत देश के बारे में और इस विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक आवश्यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा, ज्ञान परम्परा के बारे में ज्ञानवान बनाने एवं उनमें गौरव, आत्मविश्वास आत्मज्ञान, रचनात्मक ज्ञान, सहयोग एवं एकता की भावना के विकास पर आधारित है ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र से ज्ञात होता है, कि उच्च शिक्षा के विकास में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका उल्लेखनीय है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य छात्रों को अनिवार्य अधिगम समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा प्रदान करना है । यह शिक्षा नीति उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के मानसिक विकास के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण एवं मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है । यह शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित ज्ञान एवं आधुनिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी पर आधारित ज्ञान का एक अनूठा समन्वय है । इस नीति का क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गैकवाद बी.आर. एवं सोलंकी आर.एस.(2013),"ग्रोथ ऑफ हॉयर एजुकेशन इन इण्डिया", इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज वाल्यूम.2(8),58–60.
2. तिलक जे.बी.(2012),"हॉयर एजुकेशन पालिसी इन इण्डिया इन ट्रांजिशन इन इण्डिया", इकोनामिक्स पॉलिटकल विकली, वाल्यूम 47.
3. यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन(2012),"हॉयर एजुकेशन इन इण्डिया एट ए ग्लास", न्यू दिल्ली.
4. मोहन्ती ए.(2018),"एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट : ए कॉनसेप्चयुल मॉडल ऑफ सस्टेनेबल एजुकेशन फॉर इण्डिया", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डेवलपमेंट एंड सस्टेनेब्लिटी, वॉल्यूम 7.
5. शमिका एस.गुप्ता एवं एन.नागराज पी. (2019), "रिवाइविंग हॉयर एजुकेशन इन इण्डिया".
6. मूर्ति एम. एवं बेसेंट आर.एम.(2022),"हॉयर एजुकेशनःअण्डरस्टैण्डिग डिमांड एंड रिडिफाइनिंग वैल्यूज", वर्ल्ड बैंक.
7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.